प्रातःक्लास 24/4/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। बच्चों, अपन को आत्मा समझकर बैठो। यह एक बाप ही समझाते हैं। और कोई मनुष्य किसको भी समझा न सके। अपन को आत्मा समझो यह 5000 वर्ष बाद बाप ही समझाते हैं। कब सिखलाते हैं, यह भी तुम बच्चे जानते हो। बाकी तो हैं अंधे के औलाद अंधे। किसको पता नहीं है कि यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। तुम बच्चों को यह याद रहे कि हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं। तो यह भी मनमनाभव ही है। बाप कहते हैं मुझे याद करो; क्योंकि अभी तुमको वापस जाना है। 84 जन्म अभी पूरे हुये। अभी सतोप्रधान बन वापस जाना है। कोई तो बिल्कुल ही याद नहीं करते। बाप तो हरेक के पुरुषार्थ को अच्छी रीत जानते हैं। उसमें भी खास यहीं है अथवा बाहर में , बाबा जानते हैं। भल यही बैठ देखता हूँ; परन्तु मीठे–2 जो सर्विसएबुल बच्चे हैं उनको याद करता हूँ। उन्हों को देखता हूँ। एक–2 को देखते हैं यह किस प्रकार का फूल है। इनमें क्या–2 गुण हैं। कोई तो ऐसे भी हैं जिनमें कोई गुण नहीं है। मैं निर्गुण हारे में कोई गुण नाही। अभी ऐसे को बाबा देख कर क्या करेंगे? बाप तो है ही चकमक, पवित्र आत्मा। सो तो ज़रूर कशिश करेंगे; परन्तु अन्दर जानते तो हैं ना इनमें क्या गुण है। क्या सर्विस करते हैं। सभी को अपना ऑक्युपेशन तो बाप के(ो) बताना ही है। बाप अपना सारा पोतामेल बताते हैं ना। तो बच्चे भी बतावें ना। बाप तो सभी बतलाते हैं। हम तुमको विश्व का मालिक बनाने आये हैं फिर जो जैसा पुरुषार्थ करे। पुरुषार्थ जो करते हैं वह भी पता होना चाहिए ना। बाबा लिखते हैं सभी का ऑक्युपेशन लिखवा कर भेजो। जो चुस्त समझदार ब्राह्मणियां होती हैं वह सभी लिखवा कर भेजती हैं। क्या धंधा आदि करते हैं, कितनी आमदनी है। बाप अपना सभी कुछ बताते हैं ना और सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान भी सुनाते हैं। सभी की अवस्था को जानते हैं। एक–2 को देखते हैं। जैसे कि मैं बगीचे में खड़ा हूँ। यहां की भेंट फिर वहां के फूलों से करता हूँ। किसम–2 के वैरायटी फूल हैं ना। (एक फूल दिखाना) यह देखो कैसा रॉयल फूल है! एकदम खुशी में जैसे मापता(समाता) ही नहीं। खुशबुएं उनमें ऐसी हैं जो इतनी खुल नहीं सकती। फिर जब सारा खुल जावेगा तो फिर फर्स्ट क्लास खुशबुएं हो जावेगा। तुम भी लायक बन जावेंगे। ऐसे ल.ना. बनने का। तो बाप देखते रहते हैं। ऐसे नहीं कि सभी को सर्चलाइट देते हैं। जो जैसा है वैसे कशिश करते हैं सर्चलाइट लेने की। जिनमें कोई गुण नहीं वह क्यों कशिश करेंगे? फिर ऐसे ही वहां चलकर पाई पैसे के पद पावेंगे। तो बाबा हर एक के गुणों को देखते हैं। और फिर बहुत प्यार भी करते हैं। प्यार में, खुशी में नयन गीले हो जाते हैं। यह सर्विसएबुल बच्चा कितनी मेहनत करता है। इनको सर्विस बिगर आराम नहीं। कोई तो सर्विस करना जानते ही नहीं हैं। योग में बैठते भी नहीं। ज्ञान की धारणा ही नहीं होती। बाबा समझते हैं यह क्या पद पावेंगे। कोई भी छिप नहीं सकता। बच्चे तो सालिम बुद्धि हैं, सेन्टर सम्भालते हैं उनको एक–2 का पोतामेल भेजना चाहिए। तो बाबा समझे कहां तक पुरुषार्थी हैं। बाबा तो ज्ञान का सागर है। बच्चों को ज्ञान देते हैं। कौन कितना ज्ञान उठाते हैं, गुणवान बनते हैं वह (झ)ट मालूम पड़ जाता है। बाबा डिप्लोमैट भी नम्बरवन है। पत्थर बुद्धि को भी बहुत प्यार से देखेंगे ताकि इनको भासना न आवे कि बाबा को मेरे लिए कुछ होता है। बाबा प्यार तो सभी को करते हैं ना। गीत भी है ना तेरे कांटों से भी प्यार, तेरे फूलों से भी प्यार.....; इसलिए बाबा ने कहा था अच्छे–2 गीत जो वह टेप में भर दो। फिर रिकॉर्ड की दरकार नहीं रहेगी। फिर भी बाजारी है ना; परन्तु कोई करे। बेहद (क)ा बाप कहे और फट से करे ऐसा बच्चा कोई मुश्किल है। मैं तो कहूँगा एक भी नहीं। हाँ, पिछाड़ी में (हों)गे। बाबा ने कहा और किया। यह समझते नहीं हैं; क्योंकि यह गुप्त है ना। बहुत जन्मों के अंत में आकर प्रवेश किया है। तो घड़ी अपने समान ही इनको समझ लेते हैं। शिवबाबा ने कहा तो फट से करना चाहिए। बाप कहे और फट से करे तब कर्मातीत अवस्था हो। ऐसे बाप के साथ लव भी कितना चाहिए। फौरन करे

तो बाबा भी समझे इनका कितना लव है। उनको कशिश भी होगी। उनकी कशिश ऐसी है जो एकदम चटक जावेंगे; परन्तु जब तक कट नहीं निकली है तो कशिश भी होती नहीं। एक–2 को देखता हूँ। बाबा को तो सर्विसएबुल चाहिए ना। बाप तो सर्विस के लिए ही आये हैं ना। अपनी सर्विस करते हैं, पतितों को पावन बनाते हैं। तुम समझाते हो; परन्तु मनुष्य समझते थोड़े ही हैं; क्योंकि अभी तुम हो बहुत थोड़े। जब तक योग युक्त न होंगे तब तक कशिश न होगी। वह मेहनत बहुत ही थोड़े करते हैं। कोई न कोई बात में लटक मरते हैं। यह वह सतसंग नहीं है जो सुना वह सत्य और सुनकर फिर दूसरों को सुनाने में लग गये। यह कोई शास्त्र आदि तो नहीं है। सर्व शास्त्रमई शिरोमणी है ही गीता, न कि वेद। गीता में ही राजयोग है। विश्व का मालिक बनाने वाला तो बाप ही है ना। बच्चों को कहता रहता हूँ गीता से भी प्रभाव निकलेगा; परन्तु जब इतनी ताकत भी हो। योगबल का जौहर बहुत अच्छा चाहिए। यह ही डिफीकल्ट है। जिसमें बहुत–2 कमज़ोर हैं। अभी ड्रामा अनुसार टाइम भी पड़ा हुआ है। बाकी बाबा हड्डी प्यार तो कर न सके। कहते हैं ना मिठरा घुरतो(त) घुराये। बाबा सिर्फ़ कहते हैं मुझे प्यार करो तो मैं भी करूँ। यह है आत्मा का लव। एक बाप की ही याद में रहे ; क्योंकि इस याद से ही विकर्म विनाश होंगे। कोई तो बिल्कुल याद ही नहीं करते। बाप समझाते हैं भक्तिमार्ग के कितने बड़े–2 श्री–2 108 कहलाने वाले हैं। तुम तो समझते हो यह बड़े हिरण्यकश्यप हैं। भक्त लोग तो उन्हों को गुरू, ईश्वर समझ पांव धोकर पीते हैं। यहां तो वह बात नहीं। तुम जानते हो यह बाबा का रथ है। इनमें शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। शिवबाबा थोड़े ही कहेंगे पैर धोकर पीओ। बाबा तो हाथ लगाने भी नहीं देते। यह तो पढ़ाई है ना। हाथ लगाने से क्या होगा? जिन माताओं को विधवा बनाकर जाते हैं वह माईंयां ही फिर उन्हों को गुरू, ईश्वर मान बैठी हैं। जितने भी सन्यासी हैं सभी घर–बार छोड़कर जाते हैं। विधवा बनाकर जाते हैं। सीढ़ी तो नीचे उतरते ही हैं। यह भी वह लोग आगे चलकर जानेंगे जब तुम्हारे में भी ताकत आ जावेगी। तुम बच्चे लिख भी सकते हो; परन्तु इतनी विशाल बुद्धि अभी बनी नहीं है। बोलो, तुमको जो विधवा और आरफन बनाते हैं वह कैसे राजयोग सिखला सकते हैं? जो खुद घर–बार छोड़ आरफन विधवा बना देते हैं उनको ईश्वर समझकर उनके पांव धोकर पीते हैं । उसका हाल क्या हुआ? नीचे उतरते ही जाते हैं। नहीं तो अन्दर में आना चाहिए हमारे हमजिन्स को यह विधवा बनाकर जाते हैं। ऐसे को हम देखना भी नहीं चाहते। यह तो पूरे दुश्मन हैं। बाप है ही सभी की सद्गति करने वाला। वह लोग सद्गति करते हैं। क्या स्त्री की सद्गति की? परन्तु कुछ भी समझते नहीं। आसुरी बुद्धि है ना। कोटों में कोऊ ही निकलते हैं कल्प पहले वाले। जो अच्छे समझू होंगे वह तो उन्हों के मुँह भी देखने को नहीं करेंगे। माताएं तो उनके पिछाड़ी लड्डू हो पड़ती हैं। मिलता कुछ भी नहीं। भोली हैं ना। भोलानाथ बाप आकर भोलियों को उठाते हैं। वह गिराते हैं। यह चढ़ाते हैं। वह गिरा कर एकदम कमबख़्त बना देते हैं। बाप बिल्कुल ऊँच चढ़ाते हैं जीवनमुक्ति में। बाप सिर्फ़ कहते हैं विकारों को छोड़ो। इस पर ही कितने हंगामे हुये हैं। गवर्मेन्ट पास भी बहुत रिपोर्ट जाती थी। कोई का आदमी गुम होगा (त)ो पहले यहां आवेंगे कि कहां छिपा कर न बिठाया हो। जैसे चर्ये। यहां भी आर्यसमाजी हैं, जो बस पर (f)कताब बांटते रहते हैं। यहां जादू लगेगा। फिर घर नहीं लौटेंगे। सुनकर डर जाते हैं। पुरुष फिर भी (ब)हादुर होते हैं। माताएं तो डर जाती हैं। तो बाप कहते हैं अपन में देखो हमारे में क्या–2 अवगुण हैं। रोज़–रात को देखो। व्यापारी रोज़ अपना (प)ोतामेल वाधे–घाटे का निकालते हैं ना। कितना समय हम अति प्यारे ते प्यारे, मीठे ते मीठे बाप को जो हमको (f)विश्व का मालिक बनाते हैं उनको याद किया। देखोगे बहुत कम याद किया है तो आपे ही लज्जा आवेगी। यह क्या, ऐसे बाप को हमने याद नहीं किया! इससे तो डूब मरना अच्छा; परन्तु बाबा ऐसे थोड़े ही कहेंगे।

गुल–2 कैसे बनेंगे? बाबा वण्डरफुल है ना। स्वर्ग भी है सारी सृष्टि में वण्डरफुल। कलयुगी मनुष्य तो स्वर्ग़ लाखों वर्ष कह देते हैं। तुमसे कोई पूछेंगे तो तुम कहेंगे 5000 वर्ष हुये। कितना रात–दिन का फर्क है। उन्हों की बुद्धि में क्या होगा? ठिक्कर–भित्तर। ऐसे बहुत ही ..... ठगते हैं। भक्त ही आकर ज्ञान लेंगे। जो बहुत–2 भक्त हैं उन पर बाप कुर्बान जाते हैं। अति (भक्ति) की है ना। बाबा इस जन्म में भी गीता उठाता था और ना. का चित्र। ल. को तो मुक्त कर दिया चित्र से। देखा ल. सो फिर दासी! झट दासी पनु(ने) से मुक्त कर दिया। तो कितनी खुशी रहती है। जैसे सतयुग में समझते हैं हम श(य)ह शरीर छोड़ जाकर दूसरा लेंगे। बाबा को भी खुशी है हम जाकर मिचनु गोरा बनेंगे। पुरुषार्थ भी करते रहते हैं। मुफ्त में थोड़े ही बन जावेंगे। तुम भी अच्छी रीत बाप को याद करेंगे तो वर्सा पावेंगे। कोई तो पढ़ते ही नहीं। दैवीगुण धारण भी नहीं करते। पोतामेल ही नहीं रखते। पोतामेल स्थाई जो रखेंगे वह ऊँच बनने वाले होंगे। नहीं तो सिर्फ शो करेंगे। 15–20 रोज़ बाप(द) फिर लिखना छोड़ देंगे। यहां तो परीक्षाएं हैं सभी है गुप्त। हर एक का क्लालिफिकेशन बाप जानते हैं। बाबा का कहना फट से मानते हैं तो कहेंगे आज्ञाकारी, फरमानबरदार है। अभी तो बहुत ही काम चाहिए। कितने अच्छे बच्चे भी फारकती, डायवोर्स दे गये। यह किसको फारकती वा डायार्वोस थोड़े ही देंगे। यह तो ड्रामा अनुसार आये ही हैं बहुत बड़ा कॉन्ट्रेक्ट उठाने। मैं सभी से बड़ा कॉन्ट्रेक्टर हूँ। सभी को गुल–2 बनाकर वापस ले जाता हूँ। तुम बच्चे जानते हो पतितों को पावन बनाने वाला कॉन्ट्रेक्टर एक ही है। वह तुम्हारे सामने बैठे हैं। कोई को कितना निश्चय है कोई को तो नील (भी) है। आज यहां हैं, कल चले जावेंगे। चलन ऐसी है। अन्दर ज़रूर खावेगा। हम बाबा के पास रहकर क्या करते हैं? सर्विस कुछ करते नहीं तो क्या मिलेगा? रोटी पकाना, सब्जी बनाना यह तो पहले भी करते थे, नई बात नहीं। सर्विस का .... सबूत दो ना कि इतने को रास्ता बताया। बाबा तो जानते हैं। कशिश तो कोई को भी होगी। मेहतरानी को देखेंगे तो कशिश होगी। (शुरू में एक कैसे मेहतरानी आई थी हिस्ट्री सुनाना) ड्रामा बड़ा वण्डरफुल है। क्या–2 होता है तुम प्रैक्टिकल में देखते हो। शास्त्रों में क्या–2 लिख दिया है। कृष्ण आदि के चरित्र तो कुछ है नहीं। चरित्र है एक का। जो सर्व की सद्गति करते हैं इन जैसा चरित्र कोई को हो न सके। चरित्र तो कोई .... होना चाहिए। बाकी भगाना करना, यह कोई चरित्र है क्या? यह तो और ही ग्लानी है। सर्व का सद्गति दाता एक ही बाप है। वह कल्प–2 आकर स्वर्ग़ की स्थापना करते हैं। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। कोई हिसाब तो दिखावे। भगवान वो ही ठिक्कर–भित्तर में ठोक दिया है। कुत्ता–बिल्ला तो फिर भी चैतन्य है। य(ह) ठिक्कर–भित्तर में कह देते। मिट्टी का गोला बनाकर समझते हैं इनमें भी भगवान है। तब तो पूजा करते हैं। पूजा चैतन्य (की) की जाती है या जड़ की? नाम–रूप से न्यारी चीज़ उनको क्या पूजा करेंगे? जो कुछ करके जाते हैं उनकी पूजा होती है। तो बच्चों को छी–2 आदतें सभी बदलनी चाहिए। नहीं तो क्या मिलेगा? माशुक भी लक्षण देखकर आशुक होगा ना। आशुक उन पर होगा जो इनके लिए सर्विस करते होंगे। जो सर्विस ही नहीं करते वह क्या काम के। यह बातें बहुत ही समझने की हैं। बाप खुद समझाते हैं तुम महान भाग्यशाली हो। तुम्हारे जैसा भाग्यशाली कोई नहीं। भल स्वर्ग़ में तो जाते है; परन्तु अपनी प्रारब्ध ऊँच बनानी चाहिए। कल्प–कल्पांतर की बात है। स्वर्ग़ की भी अधम गति, नर्क की भी अधम गति होती है ना। पोजिशन तो कम हो जात(ी) है ना। खुश होना चाहिए कि जो मिला सो अच्छा। पुरुषार्थ बहुत अच्छा करना चाहिए। सर्विस का सबूत चाहिए। कितने को आप समान बनाया है। तुम्हारी प्रजा कहां है? बाप,टीचर तो सबकी तदवीर कराते हैं; परन्तु किसकी तकदीर में भी हो ना। कृपा, आर्शीवाद तो यह है। जो बाप अपना शान्तिधाम छोड़ कर पतित दुनियां पतित शरीर में आते हैं। नहीं तो तुमको यह रचयिता और रचना की नॉलेज कौन सुनावे। यह भी किसकी बुद्धि में नहीं बैठता सतयुग में रामराज्य, कलयुग में रावणराज्य है। रामराज्य में एक राज्य रावण राज्य में अनेक राज्य हैं। अच्छा बच्चों को गुडमॉर्निंग नमस्ते। (बाकी रही हुई प्वाइन्ट्स पीछे दूसरे में भेज देंगे।)